Ganesh Chalisa Full Path

॥ दोहा ॥

जय गणपति सदगुण सदन, कविवर बदन कृपाल।
विघ्न हरण मंगल करण, जय जय गिरिजालाल॥

॥ चौपाई ॥

जय जय जय गणपति गणराजू।
मंगल भरण करण शुभः काजू॥ **(१)**

जै गजबदन सदन सुखदाता।
विश्व विनायका बुद्धि विधाता॥ **(२)**

वक्र तुण्ड शुची शुण्ड सुहावना।
तिलक त्रिपुण्ड भाल मन भावन॥ **(३)**

राजत मणि मुक्तन उर माला।
स्वर्ण मुकुट शिर नयन विशाला॥ **(४)**

पुस्तक पाणि कुठार त्रिशूलं।
मोदक भोग सुगन्धित फूलं॥ **(५)**

सुन्दर पीताम्बर तन साजित।
चरण पादुका मुनि मन राजित॥ **(६)**

धनि शिव सुवन षडानन भ्राता।
गौरी लालन विश्व-विख्याता॥ **(७)**

ऋद्धि-सिद्धि तव चंवर सुधारे।
मुषक वाहन सोहत द्वारे॥ **(८)**

कहौ जन्म शुभ कथा तुम्हारी।
अति शुची पावन मंगलकारी॥ **(९)**

एक समय गिरिराज कुमारी।
पुत्र हेतु तप कीन्हा भारी॥ **(१०)**

भयो यज्ञ जब पूर्ण अनूपा।
तब पहुंच्यो तुम धरी द्विज रूपा॥ **(११)**

अतिथि जानी के गौरी सुखारी।
बहुविधि सेवा करी तुम्हारी॥ **(१२)**

अति प्रसन्न हवै तुम वर दीन्हा।
मातु पुत्र हित जो तप कीन्हा॥ **(१३)**

मिलहि पुत्र तुहि, बुद्धि विशाला।
बिना गर्भ धारण यहि काला॥ **(१४)**

गणनायक गुण ज्ञान निधाना।
पूजित प्रथम रूप भगवाना॥ **(१५)**

अस कही अन्तर्धान रूप हवै।
पालना पर बालक स्वरूप हवै॥ **(१६)**

बनि शिशु रुदन जबहिं तुम ठाना।
लखि मुख सुख नहिं गौरी समाना॥ **(१७)**

सकल मगन, सुखमंगल गावहिं।
नाभ ते सुरन, सुमन वर्षावहिं॥ **(१८)**

शम्भु, उमा, बहुदान लुटावहिं।
सुर मुनिजन, सुत देखन आवहिं॥ **(१९)**

लखि अति आनन्द मंगल साजा।
देखन भी आये शनि राजा॥ **(२०)**

निज अवगुण गुनि शनि मन माहीं।
बालक, देखन चाहत नाहीं॥ **(२१)**

गिरिजा कछु मन भेद बढायो।
उत्सव मोर, न शनि तुही भायो॥ **(२२)**

कहत लगे शनि, मन सकुचाई।
का करिहौ, शिशु मोहि दिखाई॥ **(२३)**

नहिं विश्वास, उमा उर भयऊ।
शनि सों बालक देखन कहयऊ॥ **(२४)**

पदतहिं शनि द्रग कोण प्रकाशा।
बालक सिर उड़ि गयो अकाशा॥ **(२५)**

गिरिजा गिरी विकल हवै धरणी।
सो दुःख दशा गयो नहीं वरणी॥ **(२६)**

हाहाकार मच्यौ कैलाशा।
शनि कीन्हों लखि सुत को नाशा॥ **(२७)**

तुरत गरुड़ चढ़ि विष्णु सिधायो।
काटी चक्र सो गज सिर लाये॥ **(२८)**

बालक के धड़ ऊपर धारयो।
प्राण मन्त्र पढ़ि शंकर डारयो॥ **(२९)**

नाम गणेश शम्भु तब कीन्हे।
प्रथम पूज्य बुद्धि निधि, वर दीन्हे॥ **(३०)**

बुद्धि परीक्षा जब शिव कीन्हा।
पृथ्वी कर प्रदक्षिणा लीन्हा॥ **(३१)**

चले षडानन, भरमि भुलाई।
रचे बैठ तुम बुद्धि उपाई॥ **(३२)**

चरण मातु-पितु के धर लीन्हें।
तिनके सात प्रदक्षिण कीन्हें॥ **(३३)**

धनि गणेश कही शिव हिये हरषे।
नभ ते सुरन सुमन बहु बरसे॥ **(३४)**

तुम्हरी महिमा बुद्धि बड़ाई।
शेष सहसमुख सके न गाई॥ **(३५)**

मैं मतिहीन मलीन दुखारी।
करहूं कौन विधि विनय तुम्हारी॥ **(३६)**

भजत रामसुन्दर प्रभुदासा।
जग प्रयाग, ककरा, दुर्वासा॥ **(३७)**

अब प्रभु दया दीना पर कीजै।
अपनी शक्ति भक्ति कुछ दीजै॥ **(३८)**

॥ दोहा ॥ श्री गणेश यह चालीसा, पाठ करै कर ध्यान।
नित नव मंगल गृह बसै, लहे जगत सन्मान॥

सम्बन्ध अपने सहस्र दश, ऋषि पंचमी दिनेश।
पूरण चालीसा भयो, मंगल मूर्ती गणेश॥

© bhaktihub.in